ISSN: 3048-8397

Bio Vet Innovator Magazine
(Fueling The Future of Science…)
Volume 3 (Issue 7) JULY 2026

OPEN ACCESS | World Zoonosis Day – 06th July 2026 | Popular Article

मुर्गी पालन में आई. एफ. एस. मॉडल से स्वरोजगार एवं पोषण सुरक्षा

डॉ नरेंद्र कुमार*, डॉ महमूदा मलिक पूर्णिमा गुमास्ता****

*प्राध्यापक; **सहायक प्राध्यपक

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, किशनगंज- 855107,
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना

***Corresponding Author:** drnarendra9931004508@gmail.com
DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21465027

Received: July 13, 2026
Published: July 16, 2026
© All rights are reserved by **नरेंद्र कुमार**

विश्व में जारी तेल और गैस संकट के कारण अधिक संख्या में श्रमिक शहरो से गाँव की ओर लौट रहे हैं। एक तरफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कारण रोज़गार के अवसर कम हो रहे हैं और कृषि, पशुपालन में रोजगार की सम्भाना बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में आने वाले समय में शहर से पालयन करने वालों परिवार की जीविका को चलाने के लिए रोजगार के साथ-साथ पोषण की भी समस्या आना लाजमी है। गाँव में रहकर ऐसे व्यवसाय की आवश्यकता है जो कम से कम लागत में अधिक आमदनी दे सके। बात चाहे स्वरोजगार की हो, उस में मुर्गी पालन एक उत्तम व्यवसाय हो सकता है। आर्थिक मंदी के समय मुर्गी पालन एक बेहतर विकल्प हो सकता है, जोकि श्रमिक एवं किसानों की निश्चित आमदनी के साथ इनके परिवार को पोषण की भी सुरक्षा दे सकता है। गाँव में लगभग 80% लोग या तो छोटे व मझोले किसान हैं या मजदूर हैं, जिनके पास रोजगार नहीं है। मुर्गी पालन एक आसान व्यवसाय होने के कारण, अशिक्षित, शिक्षित, या कम पढ़ा लिखा व्यक्ति भी इस व्यवसाय को कुशलता से कर सकते हैं। मुर्गी का अंडा पोषक तत्वों से पूर्ण है जो कि कुपोषण के खिलाफ एक बड़ा हथियार हो सकता है। अतः स्वरोजगार एवं अतिरिक्त आय के लिए मुर्गी पालन एक उत्तम घरेलू रोज़गार है। इसे अपनाकर मजदूर, भूमिहीन किसान, बेरोजगार युवक अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत कर सकते हैं तथा मांसाहारी उपभोक्ताओं को पौष्टिक आहार हेतु एक बेहतर विकल्प दे सकते हैं।

IFS (एकीकृत कृषि प्रणाली) में देशी मुर्गी पालन को फसल, बकरी, मछली, डेयरी, सब्जी, फल, वर्मी-कम्पोस्ट आदि के साथ जोड़ा जाता है, जिससे एक इकाई का अपशिष्ट दूसरी इकाई के लिए संसाधन बन जाता है। इससे आय बढ़ती है, लागत घटती है और खेती अधिक टिकाऊ बनती है।

देश की ग्रामीण अर्थ व्यवस्था में मुर्गी पालन का अपना एक अहम योगदान है। मुर्गी पालन से हजारों लोगों की आजीविका चलती है। परंतु मुर्गी पालन का प्रचलन अभी किसानों के बीच आईएफएस मॉडल में कम है। मुर्गी एक ऐसा पालतू पक्षी है जो कि आसानी से पोखर के बने ऊपर घर में में भी पाला जा सकता है। देशी मुर्गी का माँस काफी स्वादिष्ट एवं गुणवत्ता वाला होता है जिसे लोग बहुत पसंद करते हैं। देशी मुर्गी के माँस की अत्यधिक माँग होने के कारण देशी मुर्गी पालन से किसान अच्छी कमाई कर सकते हैं, तथा गाँव में भी 8-10 लोगों को रोजगार दे सकते हैं। इस व्यवसाय की खासियत ये है कि कम पूँजी, कम जगह तथा कम मेहनत में कहीं भी किया जा सकता है। इतना ही नहीं, देशी मुर्गी आकार में बड़े होते एवं दिखने में अधिक आकर्षक होते हैं। मुर्गिओं को खिलाने के लिये दाना या अन्य प्राकृतिक आहार खाने के लिये आईएफएस मॉडल के आस पास ही दाना चुग कर अथवा प्राकृतिक

आहार प्राप्त कर लेता है। जिससे कीट यादि के संख्या संख्या नियंत्रित रहती है।

आई. एफ. एस. मॉडल में देशी मुर्गी पालन की खासियत (फसल + देशी मुर्गी + मछली पालन):

आजकल कम खर्च में अधिक आमदनी के लिए आईएफएस मॉडल में देशी मुर्गी पालन व्यवसाय को बेहद लोकप्रिय बना रहा है। मुर्गी का बीट मछली के लिये एक अच्छा आहार होता है। जिसे से मछलियाँ प्राकृतिक रूप से प्रोटीन प्राप्त कर लेती है। आईएफएस मॉडल में वर्मीकम्पोस्ट से प्राप्त चेरा एबं अन्य कीट का उपयोग मुर्गी के दाने के लिया किया जा सकता है।

देशी मुर्गी की नस्लें:

भारत में केंद्रीय पक्षी अनुसन्धान संसथान, एबं पीडीपी हैदराबाद द्वारा विकसित प्रजाति

1. वनराजा 2. ग्रामप्रिया 3. कृषी बरो

देशी मुर्गी पालन करने की पद्धति:

देशी मुर्गी पालन दो पद्धति द्वारा किया जा सकता है,

1.पहला बिछावन पद्धति

2.पिंजरा पद्धति

देशी मुर्गी की ख़ासिहत:

1. आकर्षक पंख रंग पैटर्न
2. बेहतर जीवित रहने की दर
3. कम या नगण्य इनपुट लागत
4. बड़े अंडे का आकार
5. उच्च रोग सहनशीलता
6. देशी मुर्गियां वनराज अंडे की मांग ज्यादा है

देशी मुर्गी की भूमिका:

- कीट एवं खरपतवार नियंत्रण में सहायता।
- मुर्गी की बीट से जैविक खाद एवं वर्मी-कम्पोस्ट तैयार करना।
- अंडे और मांस से नियमित आय।
- खेत में बचे अनाज, कीड़े और हरे चारे का उपयोग कर चारा लागत कम करना।

आई. एफ. एस. मॉडल (IFS) में देशी मुर्गी पालन से लाभ:

उत्तर बिहार में पानी की प्रचुर मात्रा उपलब्ध है, जिसका सही उपयोग करके मछली पालन की साथ मुर्गी पालन आसानी से

किया जा सकता है। पोखर की ऊपर मुर्गी की घर होने से जो भी दाना और बीट नीचे गिरता है, उसे मछली आहार की रूप में उपयोग करती है, जिससे दाना और समय की बचत होती है। जिससे किसानो को नियमित आमदनी मिलती रहती है, तथा मजदूर की बचत होती है। एक ही मजदूर गाय, मुर्गी, मछली तथा मेढ़ पर लगाए हुए सब्जी तथा फल को देख रेख कर सकता है। जिससे किसानो को नियमित आमदनी मिलती रहती है। आईएफएस मॉडल में मुर्गी पालन किसान की लिये एक बहुत ही उत्तम मोडल है तथा मुर्गी पालन की साथ बतक भी पला जा सकता है। बतक से पोखर की सफाई के साथ साथ मछली को जायद ऑक्सीजन मिलता है तथा मछली ज्यादा बढ़ती है।

मुर्गी सह मछली पालन IFS MODEL

देशी मुर्गी पालन में आहार व्यवस्था:

एक किलो माँस का उत्पादन करने के लिए 2-2.5 किलो आहार की जरूरत होती है। अजोला के खेती कर मुर्गी के दाना के खर्च को बहुत हद तक कम कर सकते है।

देशी मुर्गी की देख भाल एवं प्रबंधन:

दूसरे पक्षियों की तुलना में देशी मुर्गी की रोग प्रतिरोधी क्षमता ज्यादा है, इसलिए देशी मुर्गी में डेथ दर (मृत्यु दर) कम है या कम होती है।

देशी मुर्गी का विपणन:

बाजार में देशी मुर्गी के माँस एवं अंडों की मांग बहुत अधिक है। देशी मुर्गी से प्राप्त उत्पादों को आसानी से नजदीकी स्थानीय बाजार में या नजदीकी शहरों में बेचा जा सकता है। किसानों को देशी मुर्गी बचने में कोई दिक्कत नहीं है।

पोषण सुरक्षा:

हम सभी जानते हैं मानव शरीर के लिए प्रोटीन बहुत आवश्यक पोषक तत्व है। प्रोटीन की कमी हमारे पोषण की प्रमुख समस्या है, खासकर बच्चों में इस समस्या को देशी मुर्गी का अंडा काफी हद तक दूर कर सकता है। देशी मुर्गी का अंडा उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन का स्रोत है, तथा यह प्रोटीन आसानी से पचता है। प्रोटीन की कमी पूरा करने के लिए हम लोगों को अपने खान पान या डाइट में देशी मुर्गी के अंडे को जरूर शामिल करना चाहिए,जिससे मनुष्य के आहार को संतुलित बनाया जा सके। देशी मुर्गी का अंडा बड़ा होने के बावजूद भी प्राकृतिक रूप से विटामिन और प्रोटीन से भरपूर है। विटामिन और प्रोटीन के कमी को पूरा करने के लिए देशी मुर्गी अंडा बहुत ही उपयोगी साबित हो सकता है। देशी मुर्गी के अंडे में भरपूर मात्रा में फैटी एसिड पाया जाता है, जो हृदय स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। देशी मुर्गी के अंडे में लिवो-प्रोटेक्टिव गुण है, जिसका अर्थ है कि यह लिवर हेल्थ के लिए बहुत अच्छा है। देशी मुर्गी का अंडा लिवर टिश्यू को नुकसान होने से बचाता है, इस प्रकार हम कह सकते हैं कि देशी मुर्गी के अंडे को अपने खानपान या डाइट में हम शामिल कर लें तो, कुपोषण की समस्या है जो हमारे देश में बहुत तेजी से बढ़ रही है, उस पर हम नियंत्रित कर सकते हैं। साथ ही उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन खाने में हम लोग आसानी से उपलब्ध करा सकते हैं। इस प्रकार के अंडों का सेवन हमारे पोषण की सुरक्षा में बहुत बड़ा योगदान दे सकता है। इसलिए यह कहना सही होगा कि देशी मुर्गी पालन से अनेक लाभ लिए जा सकते हैं।

एक सहायक व्यवसाय:

बिहार में चिकन और अंडे की बढ़ती मांग को देखते हुए मुर्गी पालन से ज्यादा लोग जुड़ने लगे हैं। पोल्ट्री फार्म को छोटे स्तर से लेकर बड़ी इंडस्ट्री के रूप में किया जा रहा है। मुर्गी पालन की शुरुआत करने के लिए आपको जगह का चुनाव गांव या शहर से थोड़ी दूर करना चाहिए। ताकि मुर्गियों पर प्रदूषण का असर न हो। पोल्ट्री फार्मिंग के लिए वह जगह चुनें जहां पानी, साफ-हवा, धूप

Citation: डॉ नरेंद्र कुमार, डॉ महमूदा मलिक, पूर्णिमा गुमास्ता. (2026). मुर्गी पालन में आई. एफ. एस. मॉडल से स्वरोजगार एवं पोषण सुरक्षा. In Bio Vet Innovator Magazine (Vol. 3 Issue 7, pp. 55–58). Bio Vet Innovator Magazine. https://doi.org/10.5281/zenodo.21465027

ISSN: 3048-8397

और वाहनों के आने-जाने का अच्छा इंतजाम हो। इससे कारोबार में वृद्धि करने का मौका मिलेगा। बेरोजगारी की समस्या हल करने में देशी मुर्गी पालन बहुत हद तक सहायक सिद्ध हो सकता है। देशी मुर्गी पालन उद्योग के साथ-साथ कई उद्योग जुड़े हुए हैं जैसे दाना उद्योग, दवाई उद्योग, मार्केटिंग और रेस्टुरेंट। इन सभी गतिविधियों में देशी मुर्गी पालन के द्वारा रोजगार सृजित किया जा सकता है। अतः स्वरोजगार एवं पोषण की सुरक्षाके लिए बटेर देशी मुर्गी पालन एक उत्तम घरेलू व्यवसाय है।

Citation: डॉ नरेंद्र कुमार, डॉ महमूदा मलिक, पूर्णिमा गुमास्ता. (2026). मुर्गी पालन में आई. एफ. एस. मॉडल से स्वरोजगार एवं पोषण सुरक्षा. In Bio Vet Innovator Magazine (Vol. 3 Issue 7, pp. 55–58). Bio Vet Innovator Magazine. https://doi.org/10.5281/zenodo.21465027